3. कुतुबुद्दिन ऐबक की समस्याएं :

जिस समय कुतुबुद्दिन ऐबक स्वतंत्र शासक बना उसके सामने अनेक समस्याएं थी। जिनका समुचित समाधान किया जाना अत्यंत आवश्यक था। उसकी समस्याएं कुछ इस प्रकार थी।

*. अमीरों की समस्या : ऐबक जब राजगद्दी पर बैठा तो उसके सामने अमीर उसके सामने अपना सुल्तान स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। यल्दोज, कुबाचा और खिलजी सरदार उसकी अधिनता स्वीकार करना अपना अपमान समझते थे। इस कठीन परिस्थिती/परिस्थिती के निराकरण के लिए ऐबक को काफी कठीन परीश्रम करना पड़ा।

*. हिन्दु राज्य : हिन्दु राज्यों की बढ़ती हुई शक्ति भी ऐबक के लिए चुनौती बनी हुई थी। क्योंकि उत्तर भारत के हिन्दु शासक उसे विदेशी आक्रमणीकारी मानकर उसके अधीन होने की अपेक्षा उसकी सत्ता के विरुद्ध करने को तत्पर रहते थे।

*. सीमा प्रान्तों की सुरक्षा : ऐबक के लिए जरूरी था कि वह सीमा प्रान्तों की सुरक्षा का सही तरीके से प्रबन्ध करे। ख्वारिज्म के शासक - शाह के मध्य एशिया मे जिस विशाल सम्राज्य की स्थापना की थी, उसे देखते हुए ऐसा करना और भी जरूरी था।

*. सशक्त सामन्त व अधिकारी : इसके शासन के अन्तर्गत तुर्की सामन्तों व अधिकारियों में भी पारस्परिक वैमनस्य और संघर्ष था। ऐबक को यह आशंका होने लगी थी कि भारतीय नरेश इसका लाभ उठाकर स्वतंत्र होने का प्रयत्न करने लगेंगे।

*. आन्तरीक/आन्तरिक अशान्ति व अव्यवस्था : सम्पूर्ण उत्तरी भारत में विद्रोह के कारण आन्तरिक व्यवस्था, प्रशासन एवं कानून शिथिल हो गये थे। चतुर्दिक/चतुर्दिक अशान्ति और व्यवस्था निहित थी। ऐबक के लिए स्थायी सम्राज्य करने के लिए शान्ति, कानुन और व्यवस्था स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक था।

यही कुछ ऐसी समस्याएं थी, जो कुतुबुद्दिन के समक्ष तत्कालिक रूप से समस्याएं पैदा खड़ी कर रही थी। परन्तु ऐबक ने इस सब पर ही बिजय/विजय प्राप्त कि।

4. कुतुबुद्दिन ऐबक की उपलब्धियाँ :

कुतुबुद्दिन ऐबक की उपलब्धियाँ कुछ इस प्रकार हैं :-

*. तुर्की सरदारों का सहयोग : भारत में अपना स्वतंत्र प्रभुत्व स्थापित करने के लिए, ऐबक ने प्रमुख तुर्की सरदारों को अपने अधीन करने के लिए या करने में सफलता प्राप्त की